दया की देवी

विनया दे ला एरॉन द्वारा लिखित

इस वर्ष के मई माह के आरम्भ में, वह बड़ा सुहावना दिन था। दोपहर का सूरज सिर के ऊपर चमक रहा था; आकाश बिलकुल स्वच्छ, नीले रंग का था, हलके-फुलके बादल थे। बाहर बेहद गरमी भी थी—वास्तव में, यह वर्ष का अब तक का सबसे ज़्यादा गरम दिन था, और ठहरी हुई हवा में भी वह गरमी महसूस हो रही थी।

हो सकता है कि ख़ास तौर पर आज के दिन हवा बिलकुल ठहरी हुई हो; लेकिन, जब कोई नन्हा-सा बच्चा आस-पास होता है तो उसके क़दमों की आवाज़, उसका ऊँचा स्वर और उसकी प्रफुल्लित ऊर्जा, हमेशा ही उत्कृष्ट स्पन्दनों का निर्माण करती है।

और चार वर्षीय रोहित के साथ भी कुछ ऐसी ही बात है। रोहित को बहुत-से लोग जानते हैं क्योंकि उन्होंने सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर उसकी प्यारी-प्यारी छवियों को तथा सीधे विडिओ प्रसारण द्वारा होने वाले सिद्धयोग सत्संगों में उसे मृदंग बजाते देखा है।

रोहित जब भी अपनी माँ के साथ अनुग्रह बिल्डिंग में स्थित भगवान नित्यानन्द मन्दिर में अपनी नित्य पूजा-अर्चना करने के लिए आता है, उसका पहला प्रश्न हमेशा यही होता है, "क्या मुझे गुरुमाई जी के दर्शन भी होंगे?" उसकी माँ के जवाब में कुछ अनिश्चितता होती है और रोहित कहता है, "मुझे उनसे मिलना है! मुझे उनके साथ खेलना है!"

उस दिन, रोहित की इच्छा पूरी हुई।

श्रीगुरुमाई ने जब उसे मन्दिर में दर्शन के बाद शिव नटराज की मूर्ति के पास देखा, उन्होंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें मेरे साथ झरने तक चलना है?"

रोहित ने कहा, "मैं वहाँ चलूँगा!" वह खिलखिलाते हुए, पास ही में स्थित झरने की ओर दौड़ने लगा। वह दिन रोहित के लिए बेहद शानदार था—बस वे दोनों ही थे—गुरुमाई जी और वह खुद।

रोहित की माँ सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के लिए फ़ोटो खींचने की अपनी सेवा करने हेतु अनुग्रह के चौक की ओर जा रही थीं। इसलिए गुरुमाई जी ने उनसे कहा कि वे मुझे यह बताएँ कि गुरुमाई जी और रोहित झरने की ओर जा रहे हैं और मैं उन दोनों के साथ चलूँ।

जैसे ही रोहित ने यह सुना, उसने गुरुमाई जी से पूछा, “क्यों? हमारे साथ कोई और क्यों चलेगा?”

गुरुमाई जी ने कहा, “विनया हमारी मदद करेगी।”

एक बार फिर से जब उसने मुझे वहाँ बुलाने का कारण पूछा तो गुरुमाई जी ने उसे समझाया कि मैं इसलिए साथ आ रही हूँ ताकि अगर कुछ ज़रूरत पड़े या कोई काम हो तो मैं उनकी मदद कर सकूँ।

कुछ मिनट बाद, मैं वहाँ पहुँच गई। गुरुमाई जी ने मुझसे कहा, “तो विनया, तुम हमारा काम करोगी, है न?”

मैंने रोहित की ओर देखते हुए बड़े उत्साह के साथ उत्तर दिया, “जी हाँ, इसीलिए मैं आपके साथ चल रही हूँ—ताकि आपका काम कर सकूँ!”

रोहित जो कुछ सुनता है, उसे दोहराना उसे पसन्द है, इसलिए उसने कहा, “अच्छा, तो विनया आप हमारा काम करेंगी!” फिर उसने गुरुमाई जी की ओर देखा और पूछा, “काम करने का क्या मतलब है?”

“हम उससे जो भी काम करने को कहेंगे, वह करेगी,” गुरुमाई जी ने कहा।

“हम आपसे जो भी काम करने को कहेंगे, आप करेंगी!” रोहित ने दोहराया। मैं देख पा रही थी कि रोहित को इस बात से तसल्ली हुई कि वह गुरुमाई जी के साथ जो समय बिताने वाला था, उसमें मैं बाधा नहीं बनूँगी।

जब हम झरने की ओर जा रहे थे, हमारे आस-पास का दृश्य ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो किसी चित्रकारी का दृश्य हो। कई महीनों से आश्रम की भूमि श्वेत-बर्फ़ की चादर से ढकी हुई थी और फिर, उसके बाद यह भूमि बार-बार होती मूसलाधार वर्षा के कारण सिक्त हो चुकी थी। आख़िरकार आज, आसमान नीला था। सूरज चमचमा रहा था। हम श्रीगुरुमाई के साथ झरने की ओर जा रहे थे।

जब हम चल रहे थे, तो झरने के दोनों ओर पेड़ों की क़तारें देखकर और घनी पत्तियों के बीच में से छनकर आती सूर्य की किरणें देखकर मैं मन्त्रमुग्ध रह गई। घास और छोट-छोटे अंकुरों से धरती पूरी तरह से आच्छादित थी तथा वसन्त ऋतु की ताज़ी धरती पर नाना प्रकार के पुष्प-पल्लव बस उगने ही लगे थे। [“गुरुमाई जी, देखिए! डैफ़ोडिल्स।” रोहित ने सफ़ेद व पीले फूलों को इंगित करते हुए उत्साह से कहा। गुरुमाई जी ने कहा, “हाँ, रोहित, तुम बिलकुल सही हो! ये डैफ़ोडिल्स *ही* हैं।”] पक्षी भी चहचहा रहे थे, और उनका मधुर कूजन ऐसा लग रहा था मानो वह इस सुहावने दिन को अर्पित किया गया संगीत हो।

रोहित बार-बार गुरुमाई जी से पूछ रहा था, "अब हम कहाँ जा रहे हैं?" हर बार जब वह यह प्रश्न पूछता, गुरुमाई जी उसे आस-पास के नज़ारे को निहारने के लिए, उस पल का आनन्द लेने के लिए प्रोत्साहित करतीं। रोहित पूरी तरह समझ जाता कि गुरुमाई जी क्या कह रही हैं और पल भर के लिए वह वैसा ही करता। और फिर अगले ही पल वह पूछता, "हम झरने पर कब पहुँचेंगे?" मुझे महसूस हुआ कि रास्ता भले ही ज़्यादा लम्बा नहीं था, परन्तु एक चार वर्ष के बच्चे को यह कई युगों-सा लम्बा लगा होगा।

आख़िरकार, हम अपने गन्तव्य पर पहुँच गए। जब हम झरने के ऊपर, पैदल चलने के लिए बने चमकीले लाल रंग के जापानी पुल को पार कर रहे थे, रोहित ने गुरुमाई जी से पूछा, "अब हम झरने के पास पहुँच गए हैं, तो अब हम कहाँ जाएँगे? और हम क्या करेंगे? क्या हम खेलेंगे?"

गुरुमाई जी ने कहा, "देखो, अभी तो हम पुल पर चल रहे हैं।"

रोहित ने कहा, "मुझे यह पुल अच्छा लगता है।"

गुरुमाई जी ने कहा, "इसका पेन्ट उखड़ रहा है, तो किसी दिन तुम इसे पेन्ट कर सकते हो।"

रोहित ने कहा, "हाँ, मैं इसे पेन्ट करना चाहता हूँ। और तब यह कितना सुन्दर दिखेगा!"

लाल रंग के छोटे-से पुल को पार करने के बाद, हमें एक बड़ी-सी एज़ेलिया झाड़ी दिखाई दी, मानो वह हमारा स्वागत कर रही हो। वह गुलाबी रंग की कलियों से आच्छादित थी, जो बस खिलने ही लगी थीं। एज़ेलिया की झाड़ी की पल्लवित शाखाओं के बीच से गुरुमाई जी ने देखा कि झरने के सामने स्थित क्वॉन यिन की मूर्ति अब भी तिरपाल से ढकी है।

आश्रम के बगीचों में देवी-देवताओं की कई मूर्तियाँ हैं और इन्हें सर्दियों के आरम्भ में ढक दिया जाता है ताकि इन्हें ख़राब मौसम या बारिश से बचाया जा सके। तथापि, बाकी सभी मूर्तियों के ऊपर से तिरपाल को कई सप्ताह पहले ही हटा दिया गया था, इसलिए यह बात अचरज में डाल देने वाली थी कि क्वॉन यिन की मूर्ति अब भी ढकी हुई क्यों है।

गुरुमाई जी ने देखा कि इस कार्य को करना आवश्यक है। परन्तु हमारे झरने पर पहुँचते ही रोहित बस एक ही चीज़ करना चाहता था, और वह थी, खेलना! मुझे याद है कि तब मैं सोचने लगी कि योजना के इस बदलाव के लिए गुरुमाई जी रोहित को कैसे मना लेंगी। फिर मैंने उन्हें यह कहते हुए सुना, "रोहित, मुझे मालूम है कि तुम्हें *सेवा* करना कितना *प्रिय* है। इसलिए, हम अभी सेवा करेंगे।"

रोहित ने कहा, “सच में? क्या हम सेवा करने वाले हैं? तो फिर खेलने का क्या होगा?”

गुरुमाई जी ने नई योजना के साथ ही बने रहते हुए कहा, “हाँ। याद है? हम जो करने को कहेंगे, विनया वह करेगी और हमें जो भी मदद चाहिए होगी, वह मदद भी करेगी।”

रोहित ने अपना सिर हिलाया और यहाँ-वहाँ चलता रहा, उसका ध्यान कहीं और था। पानी के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान पर चढ़कर उसने कहा, “गुरुमाई जी, मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। देखिए, मैं कहाँ खड़ा हूँ। मैं इस चट्टान पर खड़ा हूँ। मैं किनारे के नज़दीक नहीं जाऊँगा। मैं बस यहाँ, इस चट्टान के ऊपर ही खड़ा रहूँगा। अगर मैं ज़्यादा दूर चला गया तो मैं झरने में गिर जाऊँगा। और मैं ऐसा बिलकुल नहीं करना चाहता।”

गुरुमाई जी ने कहा, “रोहित, यह तो बड़ी ही बुद्धिमानी की बात है। तुम कितने मेधावी हो! और अब चलो, सेवा करते हैं। आओ, विनया तुम्हें दिखाएगी कि तिरपाल को कैसे खोला जाता है।”

रोहित मूर्ति की ओर लौट आया। चूँकि वह यह नहीं जानता था कि तिरपाल में क्या ढका हुआ है, उसने पूछा कि उसके अन्दर क्या है। गुरुमाई जी ने कहा, “वह तो एक सरप्राइज़ है।”

“मुझे बताइए, मुझे बताइए, मैं जानना चाहता हूँ!” रोहित ने कहा।

गुरुमाई जी ने फिर से कहा, “रोहित, वह एक सरप्राइज़ है।”

रोहित ने बड़ी ही सावधानी से मूर्ति पर लगे तिरपाल पर बँधी रस्सी की एक गाँठ को खोलना शुरू किया, हालाँकि वह ठीक से नहीं जानता था कि इसे कैसे करना है। इसलिए मैंने उसे दिखाया कि यह कितना आसान है, और जैसे ही उसने देखा कि गाँठ ढीली होने लगी है, वह मुस्कराया। रस्सियों को खोलने का यह कार्य उसे जल्दी ही *अच्छा* लगने लगा।

रस्सियाँ ढीली, और अधिक ढीली होने लगीं; रोहित को इस काम में और भी ज़्यादा मज़ा आ रहा था। और फिर—जब दूसरी रस्सी ज़मीन पर गिर गई और तिरपाल खुल गया—हमें अचानक बहुत ही कोमल व मधुर स्वर सुनाई दिए। हममें से कोई भी नहीं जानता था कि ये स्वर आ कहाँ से रहे हैं। फिर भी, जब हमने उन स्वरों को सुना, हमारा हृदय खुशी से झूम उठा।

गुरुमाई जी ने इन आवाज़ों के स्रोत को ढूँढ़ने के लिए आस-पास देखा। उनकी नज़रें धातु से बनी लाल रंग की ‘विन्ड चाइम्स्’ [हवा से बजने वाली घण्टियाँ] पर पड़ीं जो पुल के नज़दीक एक वृक्ष की शाखा पर लटक रही थीं।

गुरुमाई जी ने कहा, “रोहित! दया की देवी, क्वॉन यिन कितनी प्रसन्न हैं!”

श्रीगुरुमाई इन शब्दों को बार-बार दोहराती रहीं। “वे कितनी प्रसन्न हैं! वे कितनी प्रसन्न हैं!”

रोहित को और मुझे, हम दोनों को, श्रीगुरुमाई की प्रसन्नता, क्वॉन यिन की प्रसन्नता, प्रकृति की प्रसन्नता और हमारे अपने अन्तर की प्रसन्नता महसूस हो रही थी।

श्रीगुरुमाई ने हमें समझाया कि तिरपाल को हटाने के उद्देश्य से उसकी रस्सियों को खोलने से हम क्वॉन यिन को श्वास लेने में सहायता कर रहे हैं—और अब विन्ड चाइम्स् के मधुर स्वरों द्वारा देवी अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर रही हैं।

एक विशेष बात, जिस पर मेरा ध्यान गया, वह यह थी कि वहाँ हवा नहीं चल रही थी। वास्तव में, जब मैंने आस-पास के वृक्षों की शाखाओं को देखा तो पाया कि गरमी के उस दिन वे सभी बिलकुल स्थिर थे। और इस भारी-सी विन्ड चाइम के हिलने व बजने के लिए तेज़ हवा का बहना ज़रूरी था। तथापि, श्रीगुरुमाई ने रोहित से और मुझसे बार-बार यही कहा कि क्वॉन यिन ने ही यह ध्वनि प्रकट की है। हमने उन्हें मुक्त कर दिया था; वे विन्ड चाइम की घण्टियाँ बजाकर हमारे समक्ष अपनी प्रसन्नता को व्यक्त कर रही थीं, और हम खुद भी उसे अनुभव कर पा रहे थे।

जब हम क्वॉन यिन की मूर्ति से तिरपाल हटा रहे थे और उसके नीचे लगे बबल रैप [प्लास्टिक से बना आवरण] को भी हटा रहे थे तब विण्ड चाइम्स् लगातार बजती जा रही थीं। आख़िरकार तब रोहित समझ गया कि वह किसे अनावृत कर रहा है। उसे क्वॉन यिन के दर्शन हुए; उसे उनकी श्वेत व स्लेटी रंग के पत्थर से बनी मूर्ति के दर्शन हुए, लम्बे कान व अर्ध-चन्द्राकार बन्द आँखों वाली मूर्ति! वे अपने एक पैर को दूसरे पैर पर रखकर, ध्यान-मुद्रा में विराजमान थीं। उनके मुखमण्डल पर अत्यधिक सौम्यता, अतीव प्रशान्ति व अत्यन्त सहजता के भाव खेल रहे थे।

रोहित जब मूर्ति को निहार रहा था, गुरुमाई जी ने कहा : “क्वॉन यिन!”

रोहित ने गुरुमाई जी की ओर देखा और पूछा, “ये कौन हैं?”

गुरुमाई जी ने समझया, ये दया की देवी हैं। ये कितनी प्रसन्न हैं, रोहित।”

श्रीगुरुमाई की ओर देखकर रोहित मुस्कराया; उसकी मुस्कान इस भाव को प्रकट कर रही थी कि वह समझ रहा है। यह सब देखना बड़ा मनमोहक लग रहा था। और वह उन्हें देखकर इस तरह *क्यों* मुस्कराया? क्योंकि रोहित को शत प्रतिशत मालूम है कि हरेक कार्य को शत प्रतिशत पूरा करना ही

चाहिए। उसके माता-पिता ने उसे बहुत सुन्दर अनुशासन सिखाया है कि उसे अपने खिलौनों को सही स्थान पर रखना चाहिए और भोजन के बाद मेज़ को साफ़ करना चाहिए। वह हर काम को बड़ी लगन से करता है। और सचमुच, यहाँ भी उसने देखा, तिरपाल और रस्सियाँ अब भी ज़मीन पर बिखरी पड़ी हैं।

परन्तु यह सुनिश्चित करने के लिए कि कहीं *उसकी* योजना अधूरी न रह जाए, इसलिए रोहित ने हर्ष के साथ कहा, "गुरुमाई जी! चलिए, अब खेलते हैं।"

गुरुमाई जी ने कहा, "रोहित, सेवा अभी पूरी नहीं हुई है। हमें सफ़ेद तिरपाल को तह करके कहीं पर अच्छी तरह से रखना होगा।"

रोहित अपनी जगह पर ही क़दमताल-सा करते हुए, कहीं और जाने के लिए उतावला हो रहा था ताकि वह गुरुमाई जी के साथ—और मेरे बग़ैर—खेल सके; उसने ऐसा जताया कि उसे गुरुमाई जी की बात सुनाई ही नहीं दी।

"गुरुमाई जी! चलिए, अब खेलते हैं!" उसने फिर से कहा।

गुरुमाई जी ने फिर से कहा, "रोहित, हमें यह सेवा पूरी करनी है। आओ, इस सफ़ेद तिरपाल को तह करने में मेरी मदद करो। देखो, विनया ने तो करना शुरू भी कर दिया है।"

रोहित के बारे में एक बात जो मैंने देखी है, वह यह कि वह बात को अवश्य सुनता है और जैसा कि मैंने पहले कहा वह किसी भी कार्य को पूरा करने के महत्त्व को भी समझता है। इसलिए उसने तिरपाल को लपेटने के लिए अपना प्यारा-सा, छोटा-सा हाथ आगे बढ़ाया, और उसे यह करना बहुत अच्छा लग रहा था।

हमें दिव्य उपस्थिति का एक अनुभव प्रदान करने वाले इस अत्यन्त मज़ेदार व ख़ूबसूरत सेवा-कार्य को सम्पन्न करने के बाद, हम झरने के किनारे चलने लगे, हमारे हृदय और भी अधिक प्रसन्नता से भरे थे, और भी अधिक सन्तोष से भरे थे। इतना ही नहीं, कुछ ही मिनट में जब रोहित का खेलना आरम्भ हो गया, मुझे लगता है कि उसका हृदय पूरी तरह से खुल चुका था—क्योंकि उसने वास्तव में मुझे वहाँ रुकने तथा उसके व गुरुमाई जी के साथ खेलने के लिए आमन्त्रित किया!

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।